

وَمُقَامًا ٦٦ وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ

जगह है और वोह कि जब खर्च करते हैं न हद से बढ़ें और न तंगी करें¹²⁰ और इन दोनों के बीच

ذَلِكَ قَوْمًا ٦٧ وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ

ए'तिदाल पर रहें¹²¹ और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते¹²² और उस जान को

النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ٦٨ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ

जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी¹²³ नाहक नहीं मारते और बदकारी नहीं करते¹²⁴ और जो येह काम करे

يَلْقَ أَثَامًا ٦٩ يُضْعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ

वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अज़ाब क़ियामत के दिन¹²⁵ और हमेशा उस में ज़िल्लत से

مُهَانًا ٧٠ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَئِكَ يُبَدِّلُ

रहेगा मगर जो तौबा करे¹²⁶ और ईमान लाए¹²⁷ और अच्छा काम करे¹²⁸ तो ऐसों की बुराइयों को

اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ٧١ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ٧٢ وَمَنْ تَابَ وَ

अल्लाह भलाइयों से बदल देगा¹²⁹ और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है और जो तौबा करे और

عَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ٧٣ وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ

अच्छा काम करे तो वोह **अल्लाह** की तरफ़ रुजूअ लाया जैसी चाहिये थी और जो झूटी गवाही नहीं

120 : इसराफ़ मा'सियत में खर्च करने को कहते हैं। एक बुजुर्ग ने कहा कि इसराफ़ में भलाई नहीं। दूसरे बुजुर्ग ने कहा : नेकी में इसराफ़

ही नहीं। और तंगी करना येह है कि **अल्लाह** तआला के मुकर्रर किये हुए हुक्क के अदा करने में कमी करे, येही हज़रते इब्ने अब्बास

ने फ़रमाया। हदीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : जिस ने किसी हक़ को मन्ज़ू किया उस ने

इक्तार किया या'नी तंगी की और जिस ने नाहक में खर्च किया उस ने इसराफ़ किया। यहां उन बन्दों के खर्च करने का हाल ज़िक्र फ़रमाया

जाता है कि वोह इसराफ़ व इक्तार के दोनों मज़मूम तरीकों से बचते हैं। **121** : अब्दुल मलिक बिन मरवान ने हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़

ने फ़रमाया कि **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से अपनी बेटी बियाहते वक़्त खर्च का हाल दरयाफ़्त किया तो हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि

नेकी दो बदियों के दरमियान है। इस से मुराद येह थी कि खर्च में ए'तिदाल नेकी है और वोह इसराफ़ व इक्तार के दरमियान है जो दोनों बदियां

हैं, इस से अब्दुल मलिक ने पहचान लिया कि वोह इस आयत के मज़मूम की तरफ़ इशारा करते हैं। मुफ़रिसरीन का कौल है कि इस आयत

में जिन हज़रात का ज़िक्र है वोह सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के अस्थाबे किबार हैं जो न लज़ज़त व तनअज़ुम के लिये खाते, न ख़ुब सूरती

और ज़ीनत के लिये पहनते, भूक रोकना सत्र छुपाना सरदी गरमी की तकलीफ़ से बचना इतना उन का मक्सद था। **122** : शिर्क से बरी और

बेज़ार हैं। **123** : और उस का खून मुबाह न किया जैसे कि मोमिन व मुआहिद उस को **124** : सालिहीन से इन कबाइर की नफ़ी फ़रमाने में

कुफ़फ़ार पर ता'रीज़ है जो इन बदियों में गिरफ़्तार थे। **125** : या'नी वोह शिर्क के अज़ाब में भी गिरफ़्तार होगा और इन मअ़ापी को अज़ाब

उस अज़ाब पर और ज़ियादा किया जाएगा। **126** : शिर्क व कबाइर से **127** : सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर **128** : या'नी बा'दे तौबा

नेकी इख़्तियार करे **129** : या'नी बदी करने के बा'द नेकी की तौफ़ीक़ दे कर या येह मा'ना कि बदियों को तौबा से मिटा देगा और उन की जगह

ईमान व ताअत वगैरा नेकियां सब्त फ़रमाएगा। (मारक) मुस्लिम की हदीस में है कि रोज़े क़ियामत एक शख्स हाज़िर किया जाएगा मलाएका

ब हुक्मे इलाही उस के सगीरा गुनाह एक एक कर के उस को याद दिलाते जाएंगे वोह इक्कार करता जाएगा और अपने बड़े गुनाहों के पेश

होने से डरता होगा। इस के बा'द कहा जाएगा कि हर एक बदी के इवज़ तज़़ को नेकी दी गई। येह बयान फ़रमाते हुए सय्यिदे आलम

الرُّؤَسَا ۗ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغُومِ ۗ وَآكَرَامًا ﴿٤٢﴾ وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ

देते¹³⁰ और जब बेहूदा पर गुजरते हैं अपनी इज्जत संभाले गुजर जाते हैं¹³¹ और वोह कि जब कि उन्हें उन के रब की आयतें याद दिलाई

رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صَبًا وَعُمِيَانًا ﴿٤٣﴾ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا

जाएं तो उन पर¹³² बहरे अन्धे हो कर नहीं गिरते¹³³ और वोह जो अर्ज करते हैं ऐ हमारे रब

هَبْ لَنَا مِنْ أَرْوَاحِنَا وَذُرِّيَّتِنَا قَرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ

हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक¹³⁴ और हमें परहेज गारों का

إِمَامًا ﴿٤٤﴾ أُولَئِكَ يُجْرُونَ الْعُرْفَةَ بِبِصَابٍ وَأُوَيْلَقُونَ فِيهَا تَحِيَّةً

पेशवा बना¹³⁵ उन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाखाना इन्आम मिलेगा बदला उन के सन्न का और वहां मुजरे (दुआ व आदाब) और सलाम के साथ उन की पेशवाई

وَسَلَابًا ﴿٤٥﴾ خَلِيدِينَ فِيهَا حَسَنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا يَعْجُبُكُمْ

होगी¹³⁶ हमेशा उस में रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह तुम फरमाओ¹³⁷ तुम्हारी कुछ कद्र नहीं

رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿٤٧﴾

मेरे रब के यहां अगर तुम उसे न पूजो तो तुम ने तो झुटलाया¹³⁸ तो अब होगा वोह अज़ाब कि लिपट रहेगा¹³⁹

﴿ آيَاتُهَا ٢٢ ﴾ ﴿ سُورَةُ الشُّعْرَاءِ مَكِّيَّةٌ ٢٤ ﴾ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ١١ ﴾

सूरए शुअराअ मक्किय्या है, इस में दो सो सत्ताईस आयतें और ग्यारह रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को अल्लाह तआला की बन्दा नवाजी और उस की शाने करम पर खुशी हुई और चेहरए अक्दस पर सुरूर से तबस्सुम के आसार नुमायां हुए । 130 : और झूटों की मजलिस से अलाहदा रहते हैं और उन के साथ मुखालतत नहीं करते 131 : और अपने आप को लहव व बातिल से मुलव्वस नहीं होने देते, ऐसी मजलिस से ए'राज करते हैं । 132 : ब तरीके तगाफुल (गफ़लत करते हुए) 133 : कि न सोचें न समझें बल्कि बगोशे होश सुनते हैं और ब चश्मे बसीरत देखते हैं और उस नसीहत से पन्द पजीर होते (नसीहत कबूल करते) हैं, नफ़अ उठाते हैं और उन आयतों पर फरमां बरदाराना गिरते हैं । 134 : या'नी फरहत व सुरूर । मुराद येह है कि हमें बीबियां और औलाद, नेक सालेह मुत्तकी अता फरमा कि उन के हुस्ने अमल और उन की इताअते खुदा व रसूल देख कर हमारी आंखें ठन्डी और दिल खुश हों । 135 : या'नी हमें ऐसा परहेज गार और ऐसा आबिद व खुदा परस्त बना कि हम परहेज गारों की पेशवाई के काबिल हों और वोह दीनी उमूर में हमारी इक़तदा करें । मसअला : बा'ज मुफ़स्सिरान ने फरमाया कि इस में दलील है कि आदमी को दीनी पेशवाई और सरदारी की रग़बत व तलब चाहिये । इन आयत में अल्लाह तआला ने अपने सालिहीन बन्दों के औसाफ़ ज़िक्र फरमाए, इस के बा'द उन की जज़ा ज़िक्र फरमाई जाती है । 136 : मलाएका तहिय्यत व तस्लीम के साथ उन की तकरीम करेंगे, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की तरफ़ सलाम भेजेगा । 137 : ऐ सय्यिद अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ! अहले मक्का से कि 138 : मेरे रसूल और मेरी किताब को 139 : या'नी अज़ाबे दाइम व हलाके लाज़िम । 1 : सूरए शुअराअ मक्किय्या है सिवाए आखिर की चार आयतों के जो "وَالشُّعْرَاءُ بَيِّنُهُمْ" से शुरूअ होती हैं । इस सूत्र में ग्यारह 11 रूकूअ और दो सो सत्ताईस 227 आयतें और एक हज़ार दो सो उनसी 1279 कलिमे और पांच हज़ार पांच सो चालीस 5540 हर्फ़ हैं ।

طَسَمَ ١ تِلْكَ آيَاتِ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ٢ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا

येह आयतें हैं रोशन किताब की² कहीं तुम अपनी जान पर खेल जाओगे उन के गुम में कि वोह ईमान नहीं

مُؤْمِنِينَ ٣ إِنْ نَشَأْ نُزِّلْ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةٌ فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا

लाए³ अगर हम चाहें तो आस्मान से उन पर कोई निशानी उतारें कि उन के ऊंचे ऊंचे उस के हुजूर झुके रह

خُضِعِينَ ٤ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرِ مِنَ الرَّحْمَنِ مُحَدَّثٍ إِلَّا كَانُوا

जाएं⁴ और नहीं आती उन के पास रहमान की तरफ से कोई नई नसीहत मगर उस से मुंह

عَنْهُ مُعْرِضِينَ ٥ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنْبَاءٌ مَا كَانُوا بِهِ

फेर लेते हैं⁵ तो बेशक उन्होंने ने झुटलाया तो अब उन पर आया चाहती हैं खबरें उन के

يَسْتَهْزِءُونَ ٦ أُولَئِكَ يَرَوْنَ إِلَى الْأَرْضِ كَمَا أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ

ठठे (मजाक) की⁶ क्या उन्होंने ने ज़मीन को न देखा हम ने उस में कितने इज्जत वाले जोड़े

كَرِيمٍ ٧ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ٨ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ٩ وَإِنَّ

उगाए⁷ बेशक इस में ज़रूर निशानी है⁸ और उन के अक्सर ईमान लाने वाले नहीं और बेशक

رَبِّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ٩ وَإِذْ نَادَى رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنْ أَنْتَ الْقَوْمَ

तुम्हारा रब ज़रूर वोही इज्जत वाला मेहरबान है⁹ और याद करो जब तुम्हारे रब ने मूसा को निदा फ़रमाई कि ज़ालिम लोगों के

الظَّالِمِينَ ١٠ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ١١ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ

पास जा जो फिरऔन की क़ौम है¹⁰ क्या वोह न डरेंगे¹¹ अर्जु की ऐ मेरे रब मैं डरता हूं कि

2 : या'नी कुरआने पाक की, जिस का ए'जाज़ ज़ाहिर है और जो हक़ को बातिल से मुमताज़ करने वाला है। इस के बा'द सय्यिदे आलम से बराहे रहमत व करम ख़िताब होता है। 3 : जब अहले मक्का ईमान न लाए और उन्होंने ने सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तक्ज़ीब की तो हुजूर पर उन की महरूमि बहुत शाक़ हुई, इस पर **اَللّٰهُ** तआला ने येह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई कि आप इस क़दर गुम न करें। 4 : और कोई मा'सियत व ना फ़रमानी के साथ गरदन न उठा सके। 5 : या'नी दम बदन उन का कुफ़्र बढ़ता जाता है कि जो मौइज़त व तज़कीर (वा'ज़ो नसीहत) और जो वह्य नाज़िल होती है वोह उस का इन्कार करते चले जाते हैं। 6 : येह वईद है और इस में इन्ज़ार है कि रोज़े बद्र या रोज़े क़ियामत जब उन्हें अज़ाब पहुंचेगा तब उन्हें ख़बर होगी कि कुरआन और रसूल की तक्ज़ीब का येह अन्जाम है। 7 : या'नी क़िस्म क़िस्म के बेहतरीन और नाफ़ेअ नबातात पैदा किये और शअबी ने कहा कि आदमी ज़मीन की पैदावार हैं। जो जन्नती है वोह इज्जत वाला और करीम और जो जहन्नमी है वोह बद बख़ल लईम है। 8 : **اَللّٰهُ** तआला के कमाले कुदरत पर 9 : काफ़ि़रों से इन्तिक़ाम लेता और मोमिनीन पर रहमत फ़रमाता है। 10 : जिन्होंने ने कुफ़्र व मअ़ासी से अपनी जानों पर जुल्म किया और बनी इसराईल को गुलाम बना कर और उन्हें तरह तरह की ईज़ाएं पहुंचा कर उन पर जुल्म किया, उस क़ौम का नाम क़िब्तू है। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को उन की तरफ़ रसूल बना कर भेजा गया कि उन्हें उन की बद किरदारी पर जज़्र फ़रमाएं। 11 : **اَللّٰهُ** से, और अपनी जानों को **اَللّٰهُ** तआला पर ईमान ला कर और उस की फ़रमां बरदारी कर के उस के अज़ाब से न बचाएंगे। इस पर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में।

أَنْ يُكَذِّبُونُ ۝۱۱ وَيَضِيقُ صُدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَى

वोह मुझे झुटलाएंगे और मेरा सीना तंगी करता है¹² और मेरी ज़बान नहीं चलती¹³ तो तू हारून को भी

هُرُونَ ۝۱۲ وَلَهُمْ عَلَى ذَنْبٍ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونُ ۝۱۳ قَالَ كَلَّا فَاذْهَبَا

रसूल कर¹⁴ और उन का मुझ पर एक इल्जाम है¹⁵ तो मैं डरता हूँ कहीं मुझे¹⁶ क़त्ल कर दें फ़रमाया यूँ नहीं¹⁷ तुम दोनों मेरी आयतें

بِآيَاتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَبْعُونَ ۝۱۵ فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ

ले कर जाओ हम तुम्हारे साथ सुनते हैं¹⁸ तो फिरऔन के पास जाओ फिर उस से कहो हम दोनों उस के रसूल हैं

رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝۱۶ أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝۱۷ قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ

जो रब है सारे जहाँ का कि तू हमारे साथ बनी इसराईल को छोड़ दे¹⁹ बोला क्या हम ने तुम्हें

فِيْنَا وَلِيْدًا ۝۱۸ وَبِئْسَ مَا كَانُ يَفْعَلُ ۝۱۹ فَفَعَلْتَ فَعَلْتِكَ

अपने यहाँ बचपन में न पाला और तुम ने हमारे यहाँ अपनी उम्र के कई बरस गुज़ारे²⁰ और तुम ने किया अपना वोह काम

الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝۲۰ قَالَ فَعَلْتَهَا إِذَا وَأَنَا مِنَ

जो तुम ने किया²¹ और तुम नाशुक थे²² मूसा ने फ़रमाया मैं ने वोह काम किया जब कि मुझे राह की

الضّٰلِّيْنَ ۝۲۱ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَ

ख़बर न थी²³ तो मैं तुम्हारे यहाँ से निकल गया जब कि तुम से डरा²⁴ तो मेरे रब ने मुझे हुकम अता फ़रमाया²⁵ और

12 : उन के झुटलाने से 13 : या'नी गुफ्तगू करने में किसी क़दर तकल्लुफ़ होता है उस उक़दह (गिरह) की वजह से जो ज़बान में ब अय्यामे सिप्र सिनी मुंह में आग का अंगारा रख लेने से हो गया है। 14 : ताकि वोह तब्लोगी रिसालत में मेरी मदद करें। जिस वक़्त हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को (मुल्के) शाम में नुबुव्वत अता की गई उस वक़्त हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र में थे। 15 : कि मैं ने क़िब्ती को मारा था। 16 : उस के बदले में 17 : तुम्हें क़त्ल नहीं कर सकते और **اَللّٰهُ** तअलाला ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की दरख्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा कर हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को भी नबी कर दिया और दोनों को हुकम दिया 18 : जो तुम कहो और जो तुम्हें जवाब दिया जाए। 19 : ताकि हम उन्हें सर ज़मीने शाम में ले जाएं। फिरऔन ने चार सो बरस तक बनी इसराईल को गुलाम बनाए रखा था और उस वक़्त बनी इसराईल की ता'दाद छ⁶ लाख तीस हज़ार 630000 थी। **اَللّٰهُ** तअलाला का येह हुकम पा कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र की तरफ़ रवाना हुए, आप पश्मीना (ऊन) का जुब्बा पहने हुए थे, दस्ते मुबारक में अ़सा था, अ़सा के सिरे में ज़म्बील लटकी थी जिस में सफ़र का तोशा था, इस शान से आप मिस्र में पहुंच कर अपने मकान में दाखिल हुए। हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام वहीं थे आप ने उन्हें खबर दी कि **اَللّٰهُ** तअलाला ने मुझे रसूल बना कर फिरऔन की तरफ़ भेजा है और आप को भी रसूल बनाया है कि फिरऔन को खुदा की तरफ़ दा'वत दो। येह सुन कर आप की वालिदा साहिबा घबराई और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहने लगीं कि फिरऔन तुम्हें क़त्ल करने के लिये तुम्हारी तलाश में है, जब तुम उस के पास जाओगे तो तुम्हें क़त्ल करेगा। लेकिन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उन के येह फ़रमाने से न रुके और हज़रते हारून को साथ ले कर शब के वक़्त फिरऔन के दरवाजे पर पहुंचे, दरवाजा खट खटाया, पूछा : आप कौन हैं? हज़रत ने फ़रमाया : मैं हूँ मूसा, रब्बुल आलमीन का रसूल। फिरऔन को खबर दी गई और सुब्द के वक़्त आप बुलाए गए आप ने पहुंच कर **اَللّٰهُ** तअलाला की रिसालत अदा की और फिरऔन के पास जो हुकम पहुंचाने पर आप मामूर किये गए थे वोह पहुंचाया, फिरऔन ने आप को पहचाना। 20 : मुफ़स्सरीन ने कहा : तीस बरस, उस ज़माने में हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام फिरऔन के लिबास पहनते थे और उस की सुवारियों में सुवार होते थे और उस के फ़रजन्द मशहूर थे। 21 : क़िब्ती को क़त्ल किया 22 : कि तुम ने हमारी ने'मत की सिपास गुज़ारी न की और हमारे एक आदमी को क़त्ल कर दिया। 23 : मैं न जानता था कि

جَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝٢١ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَسُنُّهَا عَلَىٰ أَنْ عَبَّدتَّ بَنِي

मुझे पैगम्बरों से किया और यह कोई ने'मत है जिस का तू मुझ पर एहसान जताता है कि तू ने गुलाम बना कर रखे बनी

إِسْرَائِيلَ ۝٢٢ قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝٢٣ قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ

इसराईल²⁶ फिरऔन बोला और सारे जहान का रब क्या है²⁷ मूसा ने फ़रमाया रब आस्मानों

وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۝٢٤ قَالَ لَنْ حَوْلَةَ إِلَّا

और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें यकीन हो²⁸ अपने आस पास वालों से बोला क्या तुम

تَسْتَعِينُونَ ۝٢٥ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝٢٦ قَالَ إِنَّ

गौर से सुनते नहीं²⁹ मूसा ने फ़रमाया रब तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का³⁰ बोला

رَسُولَكُمُ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمْجُونًا ۝٢٧ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَال

तुम्हारे यह रसूल जो तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं ज़रूर अक्ल नहीं रखते³¹ मूसा ने फ़रमाया रब पूरब (मशरिफ़) और

الْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۝٢٨ قَالَ لَنْ اتَّخَذتَّ إِلَهًا

पश्चिम (मगरिब) का और जो कुछ इन के दरमियान है³² अगर तुम्हें अक्ल हो³³ बोला अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को खुद

घुंसा मारने से वोह शख्स मर जाएगा, मेरा मारना तादीब के लिये था, न क़त्ल के लिये 24 : कि तुम मुझे क़त्ल करोगे और शहर मद्दन को चला गया । 25 : मद्दन से वापसी के वक़्त । "हुक्म" से यहाँ या नुबुव्वत मुराद है या इल्म । 26 : या'नी इस में तेरा क्या एहसान है कि तुम ने मेरी तरबियत की और बचपन में मुझे रखा, खिलाया, पहनाया क्यूं कि मेरे तुझ तक पहुँचने का सबब तो येही हुवा कि तू ने बनी इसराईल को गुलाम बनाया उन की औलादों को क़त्ल किया, येह तेरा जुल्मे अजीम इस का बाइस हुवा कि मेरे वालिदैन मुझे परवरिश न कर सके और मेरे दरिया में डालने पर मजबूर हुए, तू ऐसा न करता तो मैं अपने वालिदैन के पास रहता, इस लिये येह बात क्या इस काबिल है कि इस का एहसान जताया जाए ? फिरऔन, मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की इस तक्रिर से ला जवाब हुवा और उस ने उस्तूबे कलाम बदला और येह गुफ्तगू छोड़ कर दूसरी बात शुरू की । 27 : जिस के तुम अपने आप को रसूल बताते हो । 28 : या'नी अगर तुम अश्या को दलील से जानने की सलाहियत रखते हो तो इन चीजों की पैदाइश उस के वुजूद की काफ़ी दलील है । ईक़ान उस इल्म को कहते हैं जो इस्तिदलाल से हासिल हो इसी लिये **अब्बाह** तआला की शान में मूक़िन नहीं कहा जाता । 29 : उस वक़्त उस के गिर्द उस की कौम के अशराफ़ में से पांच सो शख्स ज़ेवरों से आरास्ता ज़री कुर्सियों पर बैठे थे, उन से फिरऔन का येह कहना क्या तुम गौर से नहीं सुनते ब ई मा'ना था कि वोह आस्मान और ज़मीन को क़दीम समझते थे और इन के हुदूस के मुन्किर थे, मतलब येह था कि जब येह चीजें क़दीम हैं तो इन के लिये रब की क्या हाज़त ? अब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन चीजों से इस्तिदलाल पेश करना चाहा जिन का हुदूस और जिन की फ़ना मुशाहदे में आ चुकी है । 30 : या'नी अगर तुम दूसरी चीजों से इस्तिदलाल नहीं कर सकते तो खुद तुम्हारे नुफूस से इस्तिदलाल पेश किया जाता है, अपने आप को जानते हो, पैदा हुए हो, अपने बाप दादा को जानते हो कि वोह फ़ना हो गए तो अपनी पैदाइश से और उन की फ़ना से पैदा करने और फ़ना कर देने वाले के वुजूद का सुबूत मिलता है । 31 : फिरऔन ने येह इस लिये कहा कि वोह अपने सिवा किसी मा'बूद के वुजूद का काइल न था और जो इस के मा'बूद होने का ए'तिक़ाद न रखे उस को ख़ारिज अज अक्ल कहता था और हक़ीक़तन इस तरह की गुफ्तगू इज़ज़ के वक़्त आदमी की ज़बान पर आती है, लेकिन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़ज़े हिदायत व इशाद को अ़ला वज्हेल क़माल अदा किया और उस की तमाम ला या'नी (फ़ज़ूल) गुफ्तगू के बा वुजूद फिर मज़ीद बयान की तरफ़ मुतवज्जेह हुए । 32 : क्यूं कि पूरब से आफ़ताब का तुलूअ करना और पश्चिम में गुरुब हो जाना और साल की फ़स्तों में एक हिस्से मुअय्यन पर चलना और हवाओं और बारिशों वग़ैरा के निज़ाम येह सब उस के वुजूद व कुदरत पर दलालत करते हैं । 33 : अब फिरऔन मुतहय्यिर हो गया और आसारे कुदरते इलाही के इन्कार की राह बाक़ी न रही और कोई जवाब उस से बन न आया ।

غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ﴿٢٩﴾ قَالَ أَوْلَوْ جُنَّتْ بِشَىْءٍ

ठहराया तो मैं जरूर तुम्हें कैद कर दूंगा³⁴ फरमाया क्या अगर्चे मैं तेरे पास कोई रोशन चीज

مُبِينٍ ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاتِّبِ بِهٖ اِنْ كُنْتُمْ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ فَالتقى عَصَاهُ فَاذَا

लासू³⁵ कहा तो लाओ अगर सच्चे हो तो मूसा ने अपना असा डाल दिया जभी

هِيَ تُعْبَانُ مُبِينٍ ﴿٣٢﴾ وَنَزَعَ يَدَهُ فَاذَا هِيَ بِيضَاءٌ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَ

वोह सरीह अज्दहा हो गया³⁶ और अपना हाथ निकाला³⁷ तो जभी वोह देखने वालों की निगाह में जगमगाने लगा³⁸ बोला

لِلْمَلَا حَوْلَهُ اِنَّ هٰذَا السّٰحِرُ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُخْرِجَكُم مِّنْ اَرْضِكُمْ

अपने गिर्द के सरदारों से कि बेशक यह दाना जादूगर हैं चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें अपने

بِسِحْرِهِ ﴿٣٥﴾ فَمَاذَا تَأْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ قَالُوا الرَّجِيْهُ وَاخَاهُ وَاَبْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ

जादू के जोर से तब तुम्हारा क्या मश्वरा है³⁹ वोह बोले उन्हें और उन के भाई को ठहराए रहो और शहरों में

حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ يَّا تُتُوْكَ بِكُلِّ سَحٰرٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾ فَجِئِعَ السّٰحِرَةُ لِسِيْقَاتِ

जम्भ करने वाले भेजो कि वोह तेरे पास ले आएँ हर बड़े जादूगर दाना को⁴⁰ तो जम्भ किये गए जादूगर एक मुकर्रर

يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٣٨﴾ وَقِيْلَ لِلنّٰسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَبِعُوْنَ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ

दिन के वादे पर⁴¹ और लोगों से कहा गया क्या तुम जम्भ हो गए⁴² शायद हम इन

السّٰحِرَةَ اِنْ كَانُوْهُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَاءَ السّٰحِرَةُ قَالُوْا الْفِرْعَوْنَ

जादूगरों ही की पैरवी करें अगर येह गालिब आएँ⁴³ फिर जब जादूगर आए फिरऔन से बोले

34 : फिरऔन की कैद क़त्ल से बदतर थी, उस का जेलखाना तंगो तारीक अमीक गढ़ा था, उस में अकेला डाल देता था, न वहां कोई आवाज़ सुनाई आती थी न कुछ नज़र आता था। 35 : जो मेरी रिसालत की बुरहान हो। मुराद इस से मो'जिज़ा है इस पर फिरऔन ने 36 : असा अज्दहा बन कर आस्मान की तरफ ब कदर एक मील के उड़ा, फिर उतर कर फिरऔन की तरफ मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा : ऐ मूसा मुझे जो चाहिये हुक्म दीजिये। फिरऔन ने घबरा कर कहा : उस की क़सम जिस ने तुम्हें रसूल बनाया इस को पकड़ो। हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस को दस्ते मुबारक में लिया तो मिस्ले साबिक असा हो गया। फिरऔन कहने लगा : इस के सिवा और भी कोई मो'जिज़ा है ? आप ने फरमाया : हां और उस को यदे बैज़ा दिखाया। 37 : गिरेबान में डाल कर 38 : उस से आपत्ता की सी शुआअ ज़ाहिर हुई। 39 : क्यूं कि उस ज़माने में जादू का बहुत रवाज था, इस लिये फिरऔन ने खयाल किया कि येह बात चल जाएगी और उस की क़ौम के लोग इस धोके में आ कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से मुतनफ़ि़र हो जाएंगे और उन की बात कबूल न करेंगे। 40 : जो इल्मे सेहर में बकौल उन के हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से बढ़ कर हो और वोह लोग अपने जादू से हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात का मुक़ाबला करें ताकि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये हुज्जत बाकी न रहे और फिरऔनियों को येह कहने का मौक़अ मिल जाए कि येह काम जादू से हो जाते हैं लिहाज़ा नुबुव्वत की दलील नहीं। 41 : वोह दिन फिरऔनियों की ईद का था और उस मुक़ाबले के लिये वक्ते चाशत मुकर्रर किया गया था। 42 : ताकि देखो कि दोनों फ़रीक़ क्या करते हैं और उन में कौन गालिब आता है। 43 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर, इस से मक्सूद उन का जादूगरों का इत्तिबाअ करना न था, बल्कि गरज़ येह थी कि इस हीले से लोगों को हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के इत्तिबाअ से रोके।

أَيِّنَّا لَنَا لَا جُرْأَانَ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذَا لَبِئْنَا

क्या हमें कुछ मजदूरी मिलेगी अगर हम ग़ालिब आए बोला हां और उस वक्त तुम मेरे मुकर्रब

الْمُقَرَّبِينَ ﴿٣٢﴾ قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوْمَا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ﴿٣٣﴾ فَأَلْقَوْا

हो जाओगे⁴⁴ मूसा ने उन से फ़रमाया डालो जो तुम्हें डालना है⁴⁵ तो उन्होंने ने

جِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿٣٤﴾ فَأَلْقَى

अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं और बोले फिराऊन की इज्जत की कसम बेशक हमारी ही जीत है⁴⁶ तो

مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٣٥﴾ فَأَلْقَى السَّحْرَةَ

मूसा ने अपना असा डाला जभी वोह उन की बनावटों को निगलने लगा⁴⁷ अब सज्दे में

سُجِدِينَ ﴿٣٦﴾ قَالُوا أَمَّا رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾ رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ﴿٣٨﴾

गिरे जादूगर बोले हम ईमान लाए उस पर जो सारे जहान का रब है जो मूसा और हारून का रब है

قَالَ أَمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنِ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمْ الَّذِي عَلَّمَكُمُ

फिराऊन बोला क्या तुम उस पर ईमान लाए कबल इस के कि मैं तुम्हें इजाजत दू बेशक वोह तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू

السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۗ لَا قُطْعَانَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ مِّنْ خِلَافِ

सिखाया⁴⁸ तो अब जाना चाहते हो⁴⁹ मुझे कसम है बेशक मैं तुम्हारे हाथ और दूसरी तरफ़ के पाउं काटूंगा

وَالْأَوْصَالِبَتِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾ قَالُوا الْآصِيرُ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿٤٠﴾

और तुम सब को सूली दूंगा⁵⁰ वोह बोले कुछ नुकसान नहीं⁵¹ हम अपने रब की तरफ़ पलटने वाले हैं⁵²

44 : तुम्हें दरबारी बनाया जाएगा, तुम्हें खास ए'जाज़ दिये जाएंगे। सब से पहले दाखिल होने की इजाजत दी जाएगी, सब से बा'द तक दरबार में रहोगे, इस के बा'द जादूगरों ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अज़्र किया कि क्या हज़रत पहले अपना असा डालेंगे या हमें इजाजत है कि हम अपना सामान सेहर डालें। 45 : ताकि तुम उस का अन्जाम देख लो। 46 : उन्हें अपने ग़लबे का इत्मीनान था क्यूं कि सेहर के आ'माल में जो इन्तिहा के अमल थे येह उन को काम में लाए थे और यकीने कामिल रखते थे कि अब कोई सेहर इस का मुक़ाबला नहीं कर सकता। 47 : जो उन्होंने ने जादू के ज़रीए से बनाई थीं या'नी उन की रस्सियां और लाठियां जो जादू से अज़्दहे बन कर दौड़ते नज़र आ रहे थे। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का असा अज़्दहा बन कर उन सब को निगल गया फिर उस को हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने दस्ते मुबारक में लिया तो वोह मिस्ले साबिक असा था। जब जादूगरों ने येह देखा तो उन्हें यकीन हो गया कि येह जादू नहीं है। 48 : या'नी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारे उस्ताद हैं इसी लिये वोह तुम से बड़ गए। 49 : कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए। 50 : इस से मकसूद येह था कि अ़ाम खल्क डर जाए और जादूगरों को देख कर लोग हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न ले आए। 51 : ख़्वाह दुनिया में कुछ भी पेश आए क्यूं कि 52 : ईमान के साथ और हमें अल्लाह तआला से रहमत की उम्मीद है।

إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَاتِنَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾ وَ

हमें त्म्अ है कि हमारा रब हमारी ख़ताएं बख़्श दे इस पर कि हम सब से पहले ईमान लाए⁵³ और

أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ﴿٥٢﴾ فَأَرْسَلْ

हम ने मूसा को व्ह्य भेजी कि रातों रात मेरे बन्दों को⁵⁴ ले निकल बेशक तुम्हारा पीछा होना है⁵⁵ अब फिरऔन ने

فِرْعَوْنَ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٥٣﴾ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾ وَ

शहों में जम्अ करने वाले भेजे⁵⁶ कि यह लोग एक थोड़ी जमाअत हैं और

إِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ﴿٥٥﴾ وَإِنَّا لَجَبِيئٌ حَذِرُونَ ﴿٥٦﴾ فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِّنْ

बेशक वोह हम सब का दिल जलाते हैं⁵⁷ और बेशक हम सब चोकने हैं⁵⁸ तो हम ने उन्हें⁵⁹ बाहर निकाला

جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾ وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾ كَذَلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا

बागों और चशमों और खज़ानों और उम्दा मकानों से हम ने ऐसा ही किया और उन का वारिस कर दिया

بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾ فَاتَّبَعُوهُمْ مُّشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَعْنُ قَالَ

बनी इसराईल को⁶⁰ तो फिरऔनियों ने उन का तअकुब किया दिन निकले फिर जब आमना सामना हुवा दोनों गुरौहों का⁶¹ मूसा

أَصْحَبُ مُوسَىٰ إِنَّا لَمُدْرِكُونَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٦٢﴾

वालों ने कहा हम को उन्होंने ने आ लिया⁶² मूसा ने फ़रमाया यूं नहीं⁶³ बेशक मेरा रब मेरे साथ है वोह मुझे अब राह देता है

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ فَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ

तो हम ने मूसा को व्ह्य फ़रमाई कि दरिया पर अपना असा मार⁶⁴ तो जभी दरिया फट गया⁶⁵ तो हर हिस्सा हो गया

كَالطُّودِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾ وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخِرِينَ ﴿٦٤﴾ وَأَنْجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ

जैसे बड़ा पहाड़⁶⁶ और वहां क़रीब लाए हम दूसरों को⁶⁷ और हम ने बचा लिया मूसा और उस

53 : रइय्यते फिरऔन में से या इस मज्मअ के हाज़िरिन में से। इस वाकिए के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कई साल वहां इकामत फरमाई और उन लोगों को हक की दा'वत देते रहे लेकिन उन की सरकशी बढ़ती गई। 54 : या'नी बनी इसराईल को मिस्र से 55 : फिरऔन और उस के लश्कर पीछा करेंगे और तुम्हारे पीछे पीछे दरिया में दाखिल होंगे, हम तुम्हें नजात देंगे और उन्हें ग़र्क करेंगे। 56 : लश्करों को जम्अ करने के लिये। जब लश्कर जम्अ हो गए तो उन की कसरत के मुक़ाबिल बनी इसराईल की ता'दाद थोड़ी मा'लूम होने लगी। चुनान्वे फिरऔन ने बनी इसराईल की निस्वत कहा : 57 : हमारी मुख़ालफ़त कर के और बे हमारी इजाज़त के हमारी सर ज़मीन से निकल कर 58 : मुस्तइद हैं हथियार बन्द हैं। 59 : या'नी फिरऔनियों को 60 : फिरऔन और उस की क़ौम के ग़र्क के बा'द। 61 : और उन में से हर एक ने दूसरे को देखा। 62 : अब वोह हम पर काबू पा लेंगे न हम उन के मुकाबले की ताक़त रखते हैं न भागने की जगह है क्यूं कि आगे दरिया है। 63 : वा'दए इलाही पर कामिल भरोसा है। 64 : चुनान्वे हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दरिया पर असा मारा 65 : और उस के बारह हिस्से नुमूदर हुए 66 : और उन के दरमियान ख़ुशक राहें। 67 : या'नी फिरऔन और फिरऔनियों को ता आं कि वोह बनी इसराईल के रास्तों में

مَعَهُ أَجْعِبِينَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْأَخْرِينَ ﴿٦٦﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ط وَمَا

के सब साथ वालों को⁶⁸ फिर दूसरों को डुबो दिया⁶⁹ बेशक इस में जरूर निशानी है⁷⁰ और उन

كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦٨﴾

में अक्सर मुसलमान न थे⁷¹ और बेशक तुम्हारा रब वोही इज्जत वाला⁷² मेहरबान है⁷³

وَآتَلْ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾

और उन पर पढ़ो ख़बर इब्राहीम की⁷⁴ जब उस ने अपने बाप और अपनी कौम से फ़रमाया तुम क्या पूजते हो⁷⁵

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَافِيَةً ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَ إِذْ

बोले हम बुतों को पूजते हैं फिर उन के सामने आसन मारे (पूजा के लिये जम कर बैठे) रहते हैं फ़रमाया क्या वोह तुम्हारी सुनते हैं जब

تَدْعُونَ ﴿٧٢﴾ أَوْ يَنْفَعُونَكُمْ أَوْ يُضُرُّونَ ﴿٧٣﴾ قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا

तुम पुकारो या तुम्हारा कुछ भला बुरा करते हैं⁷⁶ बोले बल्कि हम ने अपने बाप दादा को

كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٧٤﴾ قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾ أَنْتُمْ وَ

ऐसा ही करते पाया फ़रमाया तो क्या देखते हो जिन्हें पूज रहे हो तुम और

آبَاءُكُمْ إِلَّا قَدَمُونَ ﴿٧٦﴾ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾ الَّذِي

तुम्हारे अगले बाप दादा⁷⁷ बेशक वोह सब मेरे दुश्मन हैं⁷⁸ मगर परवर्दगारे आलम⁷⁹ वोह जिस

خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٧٨﴾ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿٧٩﴾ وَإِذَا

ने मुझे पैदा किया⁸⁰ तो वोह मुझे राह देगा⁸¹ और वोह जो मुझे खिलाता और पिलाता है⁸² और जब

चल पड़े जो उन के लिये दरिया में ब कुदरते इलाही पैदा हुए थे। 68 : दरिया से सलामत निकाल कर 69 : या'नी फिरऔन और उस की कौम को, इस तरह कि जब बनी इसराईल कुल के कुल दरिया से बाहर हो गए और तमाम फिरऔनी दरिया के अन्दर आ गए तो दरिया ब हुक्मे इलाही मिल गया और मिस्ले साबिक हो गया और फिरऔन मअ अपनी कौम के डूब गया। 70 : **अब्रहाम** तआला की कुदरत पर और हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा है। 71 : या'नी अहले मिस्र में सिर्फ आसिया फिरऔन की बीबी और हिज़्कील जिन को मोमिन आले फिरऔन कहते हैं वोह अपना ईमान छुपाए रहते थे और फिरऔन के चचाज़ाद थे और मरयम जिस ने हज़रते यूसुफ् عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की क़ब्र का निशान बताया था जब कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلَام ने उन के ताबूत को दरिया से निकाला। 72 : कि उस ने काफ़िरों को गर्क कर के उन से इन्तिक़ाम लिया। 73 : मोमिनीन पर जिन्हें गर्क से नजात दी 74 : या'नी मुश्रिकीन पर 75 : हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَام मुश्रिकीन पर 76 : या'नी मुश्रिकीन पर 77 : हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَام मुश्रिकीन पर 78 : मैं उन का पूजा जाना गवारा नहीं कर सकता। 79 : मेरा रब है, मेरा कारसाज़ है, मैं उस की इबादत करता हूँ, वोह मुस्तहिक्के इबादत है, उस के औसाफ़ येह हैं 80 : नेस्त से हस्त (अदम से वुजूद अता) फ़रमाया और अपनी ताअत के लिये बनाया 81 : आदाबे खुल्लत की जैसी कि साबिक में हिदायत फ़रमा चुका है मसालेहे दुन्या व दीन की 82 : और मेरा रोज़ी देने वाला है।

مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾ وَالَّذِي يَبِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٨١﴾ وَالَّذِي

मैं बीमार होऊं तो वोही मुझे शिफा देता है⁸³ और वोह मुझे वफात देगा फिर मुझे जिन्दा करेगा⁸⁴ और वोह जिस

أَطَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَ

की मुझे आस लगी है कि मेरी ख़ताएं क़ियामत के दिन बख़्शेगा⁸⁵ ऐ मेरे रब मुझे हुक़्म अता कर⁸⁶ और

الْحَقِّقِي بِالصَّالِحِينَ ﴿٨٣﴾ وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ﴿٨٤﴾

मुझे उन से मिला दे जो तेरे कुर्बे ख़ास के सज़ावार हैं⁸⁷ और मेरी सच्ची नामवरी रख पिछलों में⁸⁸

وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ﴿٨٥﴾ وَاعْفُرْ لِأَبِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ

और मुझे उन में कर जो चैन के बागों के वारिस हैं⁸⁹ और मेरे बाप को बख़्शा दे⁹⁰ बेशक वोह

الصَّالِحِينَ ﴿٨٦﴾ وَلَا تَخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿٨٧﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا

गुमराह है और मुझे रुस्वा न करना जिस दिन सब उठाए जाएंगे⁹¹ जिस दिन न माल काम आएगा न

بَنُونَ ﴿٨٨﴾ إِلَّا مَنْ آتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٩﴾ وَأَزْلَفْتِ الْجَنَّةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٩٠﴾

बेटे मगर वोह जो **ALLAH** के हुज़ूर हाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर⁹² और क़रीब लाई जाएगी जन्नत परहेज़ गारों के लिये⁹³

وَبَرَزَتِ الْجَحِيمِ لِلْغَوِينَ ﴿٩١﴾ وَقِيلَ لَهُمْ أَيُّكُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٩٢﴾ مِنْ

और ज़ाहिर की जाएगी दोज़ख़ गुमराहों के लिये और उन से कहा जाएगा⁹⁴ कहां हैं वोह जिन को तुम पूजते थे **ALLAH**

دُونِ اللَّهِ هَلْ يَبْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٩٣﴾ فَكَلِّبُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ﴿٩٤﴾

के सिवा क्या वोह तुम्हारी मदद करेंगे⁹⁵ या बदला लेंगे तो औंधा दिये गए जहन्नम में वोह और सब गुमराह⁹⁶

83 : मेरे अमराज़ दूर करता है। इन्ने अता ने कहा : मा'ना येह हैं कि जब मैं खल्क की दीद से बीमार होता हूं तो मुशाहदए हक़ से मुझे शिफा अता फ़रमाता है। **84** : मौत और हयात उस के कब्ज़ए कुदरत में है। **85** : अम्बिया मा'सूम हैं गुनाह उन से सादिर नहीं होते, उन का इस्तिफ़ार अपने रब के हुज़ूर तवाजोअ है और उम्मत के लिये तलबे मफ़िरत की ता'लीम है। हज़रते इब्राहीम **السَّلَام** का इन सिफ़ते इलाहिय्यह को बयान करना अपनी क़ौम पर इक़ामते हुज्जत है कि मा'बूद वोही हो सकता है जिस की येह सिफ़ात हों। **86** : "हुक़्म" से या इल्म मुराद है या हिक़मत या नुबुव्वत। **87** : या'नी अम्बिया **السَّلَام**, और आप की येह दुआ मुस्तजाब हुई। चुनान्चे **ALLAH** तअाला फ़रमाता है : "وَأَنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لِمَنِ الصّٰلِحِيْنَ" **88** : या'नी उन उम्मतों में जो मेरे बा'द आईं। चुनान्चे **ALLAH** तअाला ने उन को येह अता फ़रमाया कि तमाम अहले अदयान उन से महब्वत रखते हैं और उन की सना करते हैं। **89** : जिन्हें तू जन्नत अता फ़रमाएगा **90** : तौबा व ईमान अता फ़रमा कर। और येह दुआ आप ने इस लिये फ़रमाई कि वक़ते मुफ़ारक़त आप के वालिद ने आप से ईमान लाने का वा'दा किया था, जब ज़ाहिर हो गया कि वोह खुदा का दुश्मन है उस का वा'दा झूटा था तो आप उस से बेज़ार हो गए जैसा कि सूएए बराअत में है : "وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِابْنِهٖ اِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَّهَا بِاِهٖ فَلَمَّا نَسِنَ لَهٗ اَنَّهُ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّأ مِّنْهُ" **91** : या'नी रोज़े क़ियामत **92** : जो शिर्क, कुफ़्र व निफ़ाक़ से पाक हो, उस को उस का माल भी नफ़अ देगा जो राहे खुदा में ख़र्च किया हो और औलाद भी जो सालेह हो। जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि जब आदमी मरता है उस के अमल मुन्क़तअ हो जाते हैं सिवा तीन के, एक सदक़ए जारिया। दूसरा वोह माल जिस से लोग नफ़अ उठाएं। तीसरी नेक औलाद जो उस के लिये दुआ करे। **93** : कि उस को देखेंगे **94** : ब तरीक़ ज़ब्रो तौबीख़ के उन के शिर्क व कुफ़्र पर **95** : अज़ाबे

وَجُودُ ابْلِيسَ أَجْعُونَ ٩٥ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ٩٦ تَاللهِ

और इब्लिस के लश्कर सारे⁹⁷ कहेंगे और वोह उस में बाहम झगड़ते होंगे खुदा की कसम

إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ٩٧ إِذْ نَسَوْنَكُمْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٩٨ وَمَا أَصَلْنَا

बेशक हम खुली गुमराही में थे जब कि तुम्हें रबुल आलमीन के बराबर ठहराते थे और हमें न बहकाया

إِلَّا الْهَجْرُمُونَ ٩٩ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ١٠٠ وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ١٠١ فَلَوْ

मगर मुजरिमों ने⁹⁸ तो अब हमारा कोई सिफारिशी नहीं⁹⁹ और न कोई गम ख़ार दोस्त¹⁰⁰ तो

أَنْ لَنَا كَرَّةٌ فَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ١٠٢ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ

किसी तरह हमें फिर जाना होता¹⁰¹ कि हम मुसलमान होते बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में

أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ١٠٣ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ١٠٤ كَذَّبَتْ

बहुत ईमान वाले न थे और बेशक तुम्हारा रब वोही इज़्ज़त वाला मेहरबान है नूह की

قَوْمِ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ١٠٥ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ١٠٦

कौम ने पैग़म्बरों को झुटलाया¹⁰² जब कि उन से उन के हमकौम नूह ने कहा क्या तुम डरते नहीं¹⁰³

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ١٠٧ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ١٠٨ وَمَا أَسْأَلُكُمْ

बेशक मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** का भेजा हुवा अमीन हूँ¹⁰⁴ तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक़्म मानो¹⁰⁵ और मैं इस पर

عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ١٠٩ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ١٠٩ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَ

तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज़्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है तो **अल्लाह** से डरो और

इलाही से बचा कर 96 : या'नी बुत और उन के पुजारी सब औंधे कर के जहन्नम में डाल दिये जाएंगे । 97 : या'नी उस के इत्तिबाअ करने

वाले जिन हों या इन्सान । बा'ज' मुफ़रिसरीन ने कहा कि इब्लिस के लश्करों से उस की जुरिय्यत मुग़द है । 98 : जिन्हों ने बुत परस्ती की

दा'वत दी या वोह पहले लोग जिन का हम ने इत्तिबाअ किया या इब्लिस और उस की जुरिय्यत ने 99 : जैसे कि मोमिनीन के लिये अम्बिया

और औलिया और मलाएका और मोमिनीन शफ़ाअत करने वाले हैं । 100 : जो काम आए । येह बात कुफ़ार उस वक़्त कहेंगे जब देखेंगे

कि अम्बिया और औलिया और मलाएका और सालिहीन ईमानदारों की शफ़ाअत कर रहे हैं और उन की दोस्तियां काम आ रही हैं । हदीस

शरीफ़ में है कि जन्नती कहेगा : मेरे फुलां दोस्त का क्या हाल है और वोह दोस्त गुनाहों की वजह से जहन्नम में होगा, **अल्लाह** तआला

फ़रमाएगा कि इस के दोस्त को निकालो और जन्नत में दाख़िल करो । तो जो लोग जहन्नम में बाक़ी रह जाएंगे वोह येह कहेंगे कि हमारा कोई

सिफ़ारिशी नहीं है और न कोई गम ख़ार दोस्त । हसन **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया : ईमानदार दोस्त बढ़ाओ क्यूं कि वोह रोजे कियामत

शफ़ाअत करेंगे । 101 : दुन्या में 102 : या'नी नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** की तक्ज़ीब तमाम पैग़म्बरों की तक्ज़ीब है क्यूं कि दीन तमाम रसूलों का एक

है और हर एक नबी लोगों को तमाम अम्बिया पर ईमान लाने की दा'वत देते हैं । 103 : **अल्लाह** तआला से, कुफ़्रो मअ़ासी तर्क करो ।

104 : उस की वह्य व रिसालत की तब्लीग़ पर । और आप की अमानत आप की कौम को मुसल्लम थी जैसे कि सय्यिदे आलम

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की अमानत पर अरब को इत्तिफ़ाक़ था । 105 : जो मैं तौहीद व ईमान व ताअते इलाही के मुतअल्लिक़ देता हूँ ।

أَطِيعُونَ ١١٠ قَالُوا أَنْتُمْ مِنْ لَكُمْ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَالُونَ ١١١ قَالُوا وَمَا

मेरा हुक्म मानो बोले क्या हम तुम पर ईमान ले आएँ और तुम्हारे साथ कमीने हुए हैं¹⁰⁶ फ़रमाया मुझे

عَلَيْكُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ١١٢ إِنَّ حِسَابَهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوَ تَشْعُرُونَ ١١٣

क्या ख़बर उन के काम क्या है¹⁰⁷ उन का हिसाब तो मेरे रब ही पर है¹⁰⁸ अगर तुम्हें हिंस (शुक्र) हो¹⁰⁹

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ١١٣ إِنَّ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ١١٥ قَالُوا لَئِن

और मैं मुसलमानों को दूर करने वाला नहीं¹¹⁰ मैं तो नहीं मगर साफ़ डर सुनाने वाला¹¹¹ बोले ऐ नूह

لَمْ تَنْتَه يَنْوَحْ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْبُرْجُومِينَ ١١٦ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي

अगर तुम बाज़ न आए¹¹² तो ज़रूर संगसार किये जाओगे¹¹³ अर्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी कौम

كَذَّبُونَ ١١٤ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ

ने मुझे झुटलाया¹¹⁴ तो मुझ में और उन में पूरा फैसला कर दे और मुझे और मेरे साथ वाले मुसलमानों को

الْمُؤْمِنِينَ ١١٨ فَأَنْجِيْنَهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ الْبَشْحُونَ ١١٩ ثُمَّ أَغْرَقْنَا

नजात दे¹¹⁵ तो हम ने बचा लिया उसे और उस के साथ वालों को भरी हुई किशती में¹¹⁶ फिर इस के बा'द¹¹⁷

بَعْدُ الْبَقِيْنَ ١٢٠ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ١٢١ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ١٢١

हम ने बाकियों को डुबो दिया बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में अक्सर मुसलमान न थे

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ١٢٢ كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ١٢٣ إِذْ

और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्ज़त वाला मेहरबान है आद ने रसूलों को झुटलाया¹¹⁸ जब कि

106 : यह बात उन्होंने ने गुरुर से कही, गुरुरा के पास बैठना उन्हें गवारा न था, इस में वोह अपनी कस्से शान (बे इज़्ज़ती) समझते थे, इस लिये ईमान जैसी ने'मत से महरूम रहे। कमीने से मुराद उन की गुरुरा और पेशावर लोग थे और उन को रज़ील और कमीन कहना यह कुपफ़ार का मुतकब्बिराना फ़े'ल था, वरना दर हकीकत सन्भत और पेशा हैसियते दीन से आदमी को ज़लील नहीं करता। ग़ना अस्ल में दीनी ग़ना है और नसब तक्वा का नसब। **मसअला** : मौमिन को रज़ील कहना जाइज़ नहीं ख़ाह वोह कितना ही मोहताज व नादार हो या वोह किसी नसब का हो। **107** (मारक) : वोह क्या पेशे करते हैं मुझे इस से क्या मतलब, मैं उन्हें **accus** की तर्फ़ दा'वत देता हूँ। **108** : वोही उन्हें जज़ा देगा। **109** : तो न तुम उन्हें ऐब लगाओ न पेशों के बाइस उन से आर करो। फिर कौम ने कहा कि आप कमीनों को अपनी मजलिस से निकाल दीजिये ताकि हम आप के पास आएँ और आप की बात मानें, इस के जवाब में फ़रमाया **110** : यह मेरी शान नहीं कि मैं तुम्हारी ऐसी ख़्वाहिशों को पूरा करूँ और तुम्हारे ईमान के लालच में मुसलमानों को अपने पास से निकाल दूँ। **111** : बुरहाने सहीह के साथ जिस से हक़ व बातिल में इम्तियाज़ हो जाए तो जो ईमान लाए वोही मेरा मुकर्रब है और जो ईमान न लाए वोही दूर। **112** : दा'वत व इन्ज़ार से **113** : हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बारगाहे इलाही में **114** : तेरी वह्य व रिसालत में, मुराद आप की यह थी कि मैं जो उन के हक़ में बद दुआ करता हूँ उस का सबब यह नहीं कि उन्होंने ने मुझे संगसार करने की धक्की दी, न यह कि उन्होंने ने मेरे मुत्तबिईन को रज़ील कहा, बल्कि मेरी दुआ का सबब यह है कि उन्होंने ने तेरे कलाम को झुटलाया और तेरी रिसालत को कबूल करने से इन्कार किया **115** : उन लोगों की शामते आ'माल से **116** : जो आदमियों, परिन्दों और हैवानों से भरी हुई थी। **117** : या'नी हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** और उन के साथियों को नजात देने के बा'द **118** : आद एक

قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝۱۲۳ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ۝۱۲۵

उन से उन के हमक़ौम हूद ने फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** का अमानत दार रसूल हूँ

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيعُوْنَ ۝۱۲۶ وَمَا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِیْ

तो **अल्लाह** से डरो¹¹⁹ और मेरा हुक्म मानो और मैं तुम से इस पर कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो

اَلَا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۱۲۴ اَتَّبِعُوْنَ بِكُلِّ رِیْعٍ اٰیةً تَعْبَثُوْنَ ۝۱۲۸ وَتَتَّخِذُوْنَ

उसी पर है जो सारे जहान का रब क्या हर बुलन्दी पर एक निशान बनाते हो राहगीरों से हंसने को¹²⁰ और मज़बूत महल

مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْذُوْنَ ۝۱۲۹ وَاِذَا بَطِشْتُمْ بَطِشْتُمْ جَبّٰرِیْنَ ۝۱۳۰ فَاتَّقُوا

चुनते हो इस उम्मीद पर कि तुम हमेशा रहोगे¹²¹ और जब किसी पर गिरिफ्त हो तो बड़ी बे दर्दी से गिरिफ्त करते हो¹²² तो **अल्लाह** से

اللّٰهَ وَاَطِيعُوْنَ ۝۱۳۱ وَاتَّقُوا الَّذِیْ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۝۱۳۲ اَمَدَّكُمْ

डरो और मेरा हुक्म मानो और उस से डरो जिस ने तुम्हारी मदद की उन चीजों से कि तुम्हें मा'लूम हैं¹²³ तुम्हारी मदद की

بِاَنْعَامٍ وَّوَبٰیْنٍ ۝۱۳۳ وَجَنَّتْ وَّعُیُوْنٍ ۝۱۳۴ اِنِّیْ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ

चौपायों और बेटों और बागों और चशमों से बेशक मुझे तुम पर डर है

یَوْمٍ عَظِیْمٍ ۝۱۳۵ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَیْنَا اَوْ عَطَّتْ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوٰعِظِیْنَ ۝۱۳۶

एक बड़े दिन के अज़ाब का¹²⁴ बोले हमें बराबर है चाहे तुम नसीहत करो या नासिहों में न हो¹²⁵

اِنَّ هٰذَا اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِیْنَ ۝۱۳۷ وَمَا نَحْنُ بِبَعْدَ بَیْنٍ ۝۱۳۸ فَكُذِّبُوْهُ

यह तो नहीं मगर वोही अगलों की रीत (रस्मो रवाज)¹²⁶ और हमें अज़ाब होना नहीं¹²⁷ तो उन्होंने ने उसे झुटलाया¹²⁸

فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۝۱۳۹ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیةٍ ۝۱۴۰ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۝۱۳۹ وَ

तो हम ने उन्हें हलाक किया¹²⁹ बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान न थे और

कबीला है और दर अरल यह एक शख्स का नाम है जिस की औलाद से यह कबीला है । 119 : और मेरी तक्ज़ीब न करो 120 : कि उस पर चढ़ कर गुज़रने वालों से तमस्बुर करो और यह उस क़ौम का मा'मूल था, उन्होंने ने सरे राह बुलन्द बनाए बना ली थीं वहां बैठ कर राह चलने वालों को परेशान करते और खेल करते । 121 : और कभी न मरोगे 122 : तलवार से क़त्ल कर के दुरें मार कर निहायत बे रहमी से 123 : या'नी वोह ने'मतें जिन्हें तुम जानते हो, आगे उन का बयान फ़रमाया जाता है । 124 : अगर तुम मेरी ना फ़रमानी करो । इस का जवाब उन की तरफ़ से यह हुवा कि 125 : हम किसी तरह तुम्हारी बात न मानेंगे और तुम्हारी दा'वत क़बूल न करेंगे । 126 : या'नी जिन चीजों का आप ने ख़ौफ़ दिलाया यह पहलों का दस्तूर है वोह भी ऐसी ही बातें कहा करते थे । इस से उन की मुराद यह थी कि हम इन बातों का ए'तिबार नहीं करते, इन्हें झूट जानते हैं । या आयत के मा'ना येह हैं कि येह मौत व ह्यात और इमारतें बनाना पहलों का तरीका है । 127 : दुन्या में न मरने के बा'द उठना न आख़िरत में हि़साब 128 : या'नी हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** को 129 : हवा के अज़ाब से ।

إِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ١٣٠ كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ١٣١ إِذْ

बेशक तुम्हारा रब ही इज्जत वाला मेहरबान है समूद ने रसूलों को झुटलाया जब कि

قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَدْحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ١٣٢ إِنْ لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ١٣٣

उन से उन के हमकौम सालेह ने फ़रमाया क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** का अमानत दार रसूल हूँ

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ١٣٣ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ

तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो और मैं तुम से कुछ इस पर उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो

إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ١٣٥ أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هُمْ بِأَمِينِينَ ١٣٦ فِي

उसी पर है जो सारे जहान का रब है क्या तुम यहां की¹³⁰ ने'मतों में चैन से छोड़ दिये जाओगे¹³¹

جَنَّتِ وَعُيُونٌ ١٣٧ وَزُرُوعٌ وَوَحْلٌ طَلَعَهَا هُضَيْمٌ ١٣٨ وَتَنْجُونَ مِنْ

बागों और चश्मों और खेतों और खजूरों में जिन का शिगूफ़ा नर्म नाजुक और पहाड़ों

الْجِبَالِ بِيَوْمٍ تَفْرِهِينَ ١٣٩ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ١٤٠ وَلَا تَطِيعُوا أَمْرَ

में से घर तराशते हो उस्तादी से¹³² तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानो और हद से बढ़ने वालों के कहने पर

السُّرْفِينِ ١٤١ الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ١٤٢ قَالُوا

न चलो¹³³ वोह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं¹³⁴ और बनाव नहीं करते¹³⁵ बोले

إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ السُّحْرَيْنِ ١٤٣ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ

तुम पर तो जादू हुवा है¹³⁶ तुम तो हमीं जैसे आदमी हो तो कोई निशानी लाओ¹³⁷ अगर

كُنْتُمْ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ١٤٤ قَالَ هٰذِهِ نٰقَةٌ لِّهَآ شَرِبٌ وَلَكُمْ شَرِبٌ يَوْمِ

सच्चे हो¹³⁸ फ़रमाया येह नाका है एक दिन इस के पीने की बारी¹³⁹ और एक मुअय्यन दिन

130 : या'नी दुन्या की 131 : कि येह ने'मतें कभी जाइल न हों और कभी अजाब न आए कभी मौत न आए, आगे उन की ने'मतों का बयान है । 132 : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि **فَرَّةٌ** ब मा'ना फ़ख्रो गुरुर है । मा'ना येह हुए कि अपनी सन्नत पर गुरुर करते इतराते । 133 : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि "مسرفين" से मुराद मुश्रिकीन हैं । बा'ज मुफ़स्सरीन ने कहा कि "مسرفين" से मुराद वोह नव शख़्स हैं जिन्हों ने नाका को कत्ल किया था । 134 : कुफ़्रो जुल्म और मअ़ासी के साथ 135 : ईमान ला कर और अदल काइम कर के और **अल्लाह** के मुतीअ़ हो कर । मा'ना येह हैं कि इन का फ़साद ठोस है जिस में किसी तरह नेकी का शाएबा भी नहीं और बा'ज मुफ़सदीन ऐसे भी होते हैं कि कुछ फ़साद भी करते हैं कुछ नेकी भी उन में होती है मगर येह ऐसे नहीं । 136 : या'नी बार बार ब कसरत जादू हुवा है जिस की वजह से अक्ल बजा नहीं रही (مماذالله) 137 : अपनी सच्चाई की 138 : रिसालत के दा'वे में । 139 : इस में इस से मुजाहमत न करो, येह एक ऊंटनी थी जो उन के मो'जिजा त़लब करने पर उन के हस्बे ख़्वाहिशे ब दुआए हज़रते सालेह **عَلَيْهِ السَّلَام** पथ़र से निकली थी, उस का सीना साठ गज़ का था, जब उस के पीने का दिन होता तो वोह वहां का तमाम पानी पी जाती और

مَعْلُومٍ ١٥٥ وَلَا تَسْؤُهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ ١٥٦

तुम्हारी बारी और इसे बुराई के साथ न छूओ¹⁴⁰ कि तुम्हें बड़े दिन का अज़ाब आ लेगा¹⁴¹

فَعَقَرُوا وَهَافًا صَبَحُوا نِدْمِينَ ١٥٤ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ١٥٤

इस पर उन्होंने ने उस की कूचें काट दीं¹⁴² फिर सुब्ह को पचताते रह गए¹⁴³ तो उन्हें अज़ाब ने आ लिया¹⁴⁴ बेशक इस में ज़रूर निशानी है

وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ١٥٨ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ١٥٩

और उन में बहुत मुसलमान न थे और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्जत वाला मेहरबान है

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ١٦٠ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا

लूत की कौम ने रसूलों को झुटलाया जब कि उन से उन के हमकौम लूत ने फ़रमाया क्या

تَتَّقُونَ ١٦١ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ١٦٢ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ١٦٣ وَ

तुम डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये **ALLAH** का अमानत दार रसूल हूँ तो **ALLAH** से डरो और मेरा हुक्म मानो और

مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ١٦٤ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ١٦٥

मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज़्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है

آتَاؤُنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ١٦٥ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ

क्या मख़्लूक में मर्दों से बद फ़े'ली करते हो¹⁴⁵ और छोड़ते हो वोह जो तुम्हारे लिये तुम्हारे रब ने

مِّنْ أَرْوَاحِكُمْ ١٦٦ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ١٦٦ قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنْتَهَ يَلُوطُ

जोरुएं (बीवियां) बनाई बल्कि तुम लोग हृद से बढ़ने वाले हो¹⁴⁶ बोले ऐ लूत अगर तुम बाज़ न आए¹⁴⁷

لَتَكُونَنَّ مِنَ الْخُرَاجِينَ ١٦٧ قَالَ إِنِّي بَعَدِكُمْ مِّنَ الْقَالِينَ ١٦٨ رَبِّ

तो ज़रूर निकाल दिये जाओगे¹⁴⁸ फ़रमाया मैं तुम्हारे काम से बेज़ार हूँ¹⁴⁹ ऐ मेरे रब

जब लोगों के पीने का दिन होता तो उस दिन न पीती। (मारक) 140 : न इस को मारो न इस की कूचें काटो। 141 : नुजुले अज़ाब की वजह से उस दिन को बड़ा फ़रमाया गया ताकि मा'लूम हो कि वोह अज़ाब इस क़दर अज़ीम और सख़्त था कि जिस दिन में वोह वाक़ेअ हुवा उस को उस की वजह से बड़ा फ़रमाया गया। 142 : कूचें काटने वाले शख्स का नाम कुदार था और वोह लोग उस के इस फ़े'ल से राज़ी थे, इस लिये कूचें काटने की निस्वत उन सब की तुरफ़ की गई। 143 : कूचें काटने पर नुजुले अज़ाब के ख़ौफ़ से, न कि मा'सियत पर ताइबाना नादिम हुए हो, या येह बात कि आसारे अज़ाब देख कर नादिम हुए, ऐसे वक़्त की नदामत नाफ़ेअ नहीं। 144 : जिस की उन्हें ख़बर दी गई थी तो हलाक हो गए। 145 : इस के येह मा'ना भी हो सकते हैं कि क्या मख़्लूक में ऐसे क़बीह और ज़लील फ़े'ल के लिये तुम्हीं रह गए हो, जहां के और लोग भी तो हैं उन्हें देख कर तुम्हें शरमाना चाहिये। और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि ब कसरत औरतें होते हुए इस फ़े'ले क़बीह का मुरतक़िब होना इन्तिहा दरजे की ख़बासत है। 146 : कि हलाल तय्यिब को छोड़ कर हराम ख़बीस में मुब्तला होते हो। 147 : नसीहत करने और इस फ़े'ल को बुरा कहने से 148 : शहर से और तुम्हें यहां न रहने दिया जाएगा। 149 : और मुझे इस से निहायत दुश्मनी है, फिर आप ने बारगाहे इलाही में दुआ की।

نَجِّنِي وَأَهْلِي مَنَاعِلُونَ ﴿١٦٩﴾ فَجَنَّبْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾ إِلَّا عَجُوزًا

मुझे और मेरे घर वालों को इन के काम से बचा¹⁵⁰ तो हम ने उसे और उस के सब घर वालों को नजात बख्शी¹⁵¹ मगर एक बुढ़िया

فِي الْغُبَرِيِّنَ ﴿١٧١﴾ ثُمَّ دَمَرْنَا الْأَخْرِيْنَ ﴿١٧٢﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطْرًا فَسَاءً

कि पीछे रह गई¹⁵² फिर हम ने दूसरों को हलाक कर दिया और हम ने उन पर एक बरसाव बरसाया¹⁵³ तो क्या ही बुरा

مَطْرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ط وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ

बरसाव था डराए गयों का बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसल्मान

مُؤْمِنِينَ ﴿١٧٤﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٧٥﴾ كَذَّبَ أَصْحَابُ

न थे और बेशक तुम्हारा रब ही इज़्जत वाला मेहरबान है बन (जंगल)

لَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٦﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾ إِنِّي لَكُمْ

वालों ने रसूलों को झुटलाया¹⁵⁴ जब उन से शुऐब ने फ़रमाया क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये

رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٧٨﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونَ ﴿١٧٩﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ

अल्लाह का अमानत दार रसूल हूँ तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो और मैं इस पर कुछ तुम से उजरत

أَجْرٍ إِنْ أَجْرِي إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٠﴾ أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا

नहीं मांगता मेरा अन्न तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है¹⁵⁵ नाप पूरा करो और घटाने

مِنَ الْمُخْسِرِينَ ﴿١٨١﴾ وَزِنُوا بِالْقِسْطِ أَلْسِنَتِكُمْ وَاللَّيْسُ بِالْبَخْسِ وَالنَّاسُ

वालों में न हो¹⁵⁶ और सीधी तराजू से तोलो और लोगों की चीजों कम कर के

أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿١٨٢﴾ وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ

न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो¹⁵⁷ और उस से डरो जिस ने तुम को पैदा किया

150 : इस की शामते आ'माल से महफूज रख । 151 : या'नी आप की बेटियों को और उन तमाम लोगों को जो आप पर ईमान लाए ।

152 : जो आप की बीबी थी और वोह अपनी कौम के फे'ल पर राजी थी और जो मा'सियत पर राजी हो वोह आसी के हुक्म में होता है, इसी लिये वोह बुढ़िया गिरफ्तारे अज़ाब हुई और उस ने नजात न पाई । 153 : पथरों का या गन्धक और आग का 154 : येह बन (जंगल) मद्यन के करीब था, इस में बहुत से दरख्त और झाड़ियां थीं अल्लाह तआला ने हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام को उन की तरफ मबऊस फरमाया था जैसा कि अहले मद्यन की तरफ मबऊस किया था और येह लोग हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام की कौम के न थे । 155 : उन तमाम अम्बिया की दा'वत का येही उन्वान रहा क्यूं कि वोह सब हज़रत अल्लाह तआला के खौफ और उस की इताअत और इख्लास फिल इबादत का हुक्म देते और तल्लीगे रिसालत पर कोई अन्न नहीं लेते थे । लिहाज़ा सब ने येही फरमाया । 156 : लोगों के हुक्क कम न करो नाप और तोल में 157 : रहज़नी और लूटमार कर के और खेतियां तबाह कर के, येही उन लोगों की आदतें थीं । हज़रते शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें इन से मन्अ फरमाया ।

وَالْجِبَلَةَ الْاَوْلِيْنَ ۝۱۸۳۱ قَالَوا اِنبَا اَنْتَ مِنَ الْمُسْحَرِيْنَ ۝۱۸۵ وَمَا اَنْتَ

और अगली मख्लूक को बोले तुम पर जादू हुवा है तुम तो नहीं

اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝۱۸۶ فَاَسْقُطْ عَلَيْنَا كِسْفًا

मगर हम जैसे आदमी¹⁵⁸ और बेशक हम तुम्हें झूठा समझते हैं तो हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा

مِّنَ السَّمٰوٰتِ اِنْ كُنْتُمْ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝۱۸۷ قَالَ رَبِّ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝۱۸۸

गिरा दो अगर तुम सच्चे हो¹⁵⁹ फ़रमाया मेरा रब खूब जानता है जो तुम्हारे कौतक (करतूत) हैं¹⁶⁰

فَكٰذِبُوْهُ لَا فَاخْذَ لَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۝۱۸۹ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝۱۸۹

तो उन्होंने ने उसे झुटलाया तो उन्हें शामियाने वाले दिन के अज़ाब ने आ लिया बेशक वोह बड़े दिन का अज़ाब था¹⁶¹

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۝۱۹۰ وَمَا كَانَ اَكْثَرَهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۱۹۰ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ

बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में बहुत मुसलमान न थे और बेशक तुम्हारा रब ही

الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝۱۹۱ وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلٌ مِّنْ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝۱۹۲ نَزَلَ بِهٖ الرُّوْحُ

इज़्ज़त वाला मेहरबान है और बेशक यह कुरआन रबूल आलमीन का उतारा हुवा है इसे रूहुल अमीन ले

الْاَمِيْنَ ۝۱۹३ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝۱९३ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ

कर उतरा¹⁶² तुम्हारे दिल पर¹⁶³ कि तुम डर सुनाओ रोशन अरबी

مُّبِيْنٍ ۝۱९५ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبْرِ الْاَوْلٰٓئِيْنَ ۝۱९६ اَوْ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ اٰيَةٌ اَنْ

ज़बान में और बेशक इस का चरचा अगली किताबों में है¹⁶⁴ और क्या यह उन के लिये निशानी न थी¹⁶⁵ कि उस

158 : नुबुव्वत का इन्कार करने वाले अम्बिया की निस्वत बिल उमूम येही कहा करते थे । जैसा कि आज कल के बा'जे फ़ासिदुल अक़ीदा

कहते हैं । 159 : नुबुव्वत के दा'वे में । 160 : और जिस अज़ाब के तुम मुस्तहक़ हो, वोह जो अज़ाब चाहेगा तुम पर नाज़िल फ़रमाएगा ।

161 : जो कि इस तरह हुवा कि उन्हें शदीद गरमी पहुंची, हवा बन्द हुई और सात रोज़ गरमी के अज़ाब में गिरिफ़्तार रहे, तहख़ानों में जाते

वहां और ज़ियादा गरमी पाते । इस के बा'द एक अब्र आया सब उस के नीचे आ के जम्अ हो गए, उस से आग बरसी और सब जल गए ।

(इस वाक़िअ का बयान सूए आ'राफ़ और सूए हूद में गुज़र चुका है) । 162 : रूहुल अमीन से हज़रते जिब्रील मुराद हैं जो वह्य के अमीन

हैं । 163 : ताकि आप उसे महफूज़ रखें और समझें और न भूलें । दिल की तख़सीस इस लिये है कि दर हकीकत वोही मुखातब है और तमीज़

व अक़्ल व इख़्तियार का मक़ाम भी वोही है, तमाम आ'जा उस के मुसख़र व मुतीअ हैं । हदीस शरीफ़ में है कि दिल के दुरुस्त होने से तमाम

बदन दुरुस्त हो जाता है और इस के ख़राब होने से सब जिस्म ख़राब । और फ़रह व सुरूर व रन्जो गुम का मक़ाम दिल ही है, जब दिल को

खुशी होती है तमाम आ'जा पर इस का असर पड़ता है, तो वोह मिस्ल रईस के है, वोही मौज़अ है अक़्ल का, तो अमीरे मुत्लक हुवा और

तक्लीफ़ जो अक़्ल व फ़हम के साथ मशरूत है इसी की तरफ़ राजेअ हुई । 164 : "اِنَّهٗ" की ज़मीर का मरजअ अगर कुरआन हो तो इस के

मा'ना येह होंगे कि इस का ज़िक्र तमाम कुतुबे समाविया में है और अगर सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ ज़मीर राजेअ हो तो मा'ना येह

होंगे कि अगली किताबों में आप की ना'त व सिफ़त मज़ूर है । 165 : सय्यिदे आलम صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के सिद्के नुबुव्वत व रिसालत पर ।

يَعْلَمُهُ عَلَّمُوا ابْنَ إِسْرَائِيلَ ۝١٩٤ ۝ وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ۝١٩٨

नबी को जानते हैं बनी इसराईल के आलम¹⁶⁶ और अगर हम उसे किसी गैर अरबी शख्स पर उतारते

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۝١٩٩ ۝ كَذَلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ

कि वोह उन्हें पढ़ सुनाता जब भी उस पर ईमान न लाते¹⁶⁷ हम ने यूही झुटलाना पैरा दिया (पैवस्त कर दिया) है मुजरिमों के

الْجُرْمِينَ ۝٢٠٠ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرُوا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝٢٠١ ۝ فَيَأْتِيهِمْ

दिलों में¹⁶⁸ वोह इस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि देखें दर्दनाक अज़ाब तो वोह अचानक उन पर

بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝٢٠٢ ۝ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ۝٢٠٣ ۝ أَفَبِعَدَابِنَا

आ जाएगा और उन्हें खबर न होगी तो कहेंगे क्या हमें कुछ मोहलत मिलेगी¹⁶⁹ तो क्या हमारे अज़ाब की

يَسْتَعْجِلُونَ ۝٢٠٤ ۝ أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ۝٢٠٥ ۝ ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا

जल्दी करते हैं भला देखो तो अगर कुछ बरस हम उन्हें बरतने दें¹⁷⁰ फिर आए उन पर वोह जिस का वोह वा'दा

يُوعَدُونَ ۝٢٠٦ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَسْتَعُونُ ۝٢٠٧ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ

दिये जाते हैं¹⁷¹ तो क्या काम आएगा उन के वोह जो बरतते थे¹⁷² और हम ने कोई बस्ती हलाक

قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ۝٢٠٨ ۝ ذِكْرًا ۝ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝٢٠٩ ۝ وَمَا

न की जिसे डर सुनाने वाले न हों नसीहत के लिये और हम जुल्म नहीं करते¹⁷³ और इस

¹⁶⁶ : अपनी किताबों से, और लोगों को खबरें देते हैं। हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهم ने फरमाया कि अहले मक्का ने यहूद मदीना के पास अपने मो'तमिदीन को येह दरयाफ्त करने भेजा कि क्या नबिये आखिरुज्जमान सय्यदे का एनात मुहम्मद मुस्तफा صلی الله تعالى علیه وسلم की निस्बत उन की किताबों में कोई खबर है? इस का जवाब उलमाए यहूद ने येह दिया कि येही उन का ज़माना है और उन की ना'त व सिफत तौरैत में मौजूद है। उलमाए यहूद में से हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने सलाम और इब्ने यामीन और सा'लबा और असद और उसैद येह हज़रत जिन्हों ने तौरैत में हुज़ूर के औसाफ़ पढ़े थे हुज़ूर पर ईमान लाए। ¹⁶⁷ : मा'ना येह हैं कि हम ने येह कुरआने करीम एक फसीह बलीग़ अरबी नबी पर उतारा जिस की फसाहत अहले अरब को मुसल्लम है और वोह जानते हैं कि कुरआने करीम मो'जिज़ है और इस की मिस्त एक सूत बनाने से भी तमाम दुन्या आजिज़ है, इलावा बरों उलमाए अहले किताब का इत्तिफाक है कि इस के नुज़ूल से कुबल इस के नाज़िल होने की बिशाारत और इस नबी की सिफत उन की किताबों में उन्हें मिल चुकी है, इस से कुरई तौर पर साबित होता है कि येह "नबी" **अव्वाह** के भेजे हुए हैं और येह किताब उस की नाज़िल फरमाई हुई है, और कुप्फ़र जो तरह तरह की बेहूदा बातें इस किताब के मुतअल्लिक कहते हैं सब बातिल हैं और खुद कुप्फ़र भी मुतहय्यिर (हेरान) हैं कि इस के खिलाफ क्या बात कहें। इस लिये कभी इस को पहलों की दास्तानें कहते हैं, कभी शे'र कभी सेहर और कभी येह कि **مَعَادُ اللَّهِ** इस को खुद सय्यदे आलम صلی الله تعالى علیه وسلم ने बना लिया है और **अव्वाह** तआला की तरफ इस की गलत निस्बत कर दी है। इस तरह के बेहूदा ए'तिराज़ मुआनिद (हासिद) हर हाल में कर सकता है, हत्ता कि अगर बिलफ़र्ज़ येह कुरआन किसी गैर अरबी शख्स पर नाज़िल किया जाता जो अरबी की महारत न रखता और बा वुजूद इस के वोह ऐसा मो'जिज़ कुरआन पढ़ कर सुनाता, जब भी येह लोग इसी तरह कुफ़र करते जिस तरह उन्होंने ने अब कुफ़र व इन्कार किया क्यूं कि उन के कुफ़र व इन्कार का बाइस इनाद है। ¹⁶⁸ : या'नी उन काफ़िरो के जिन का कुफ़र इख़्तियार करना और इस पर मुसिर रहना हमारे इल्म में है, तो उन के लिये हिदायत का कोई भी तरीका इख़्तियार किया जाए किसी हाल में वोह कुफ़र से पलटने वाले नहीं। ¹⁶⁹ : ताकि हम ईमान लाएं और तस्दीक करें। लेकिन उस वक़्त मोहलत न मिलेगी। जब सय्यदे आलम صلی الله تعالى علیه وسلم ने कुप्फ़र को उस अज़ाब की खबर दी तो बराहे तमस्बुर व इस्तिहज़ा कहने लगे कि येह अज़ाब कब आएगा? इस पर **अव्वाह** तबारक व तआला इशाद फ़रमाता है: ¹⁷⁰ : और फ़ौरन हलाक न कर दें ¹⁷¹ : या'नी अज़ाब इलाही ¹⁷² : या'नी दुन्या की जिन्दगानी और इस का ऐश ख़्वाह तबील भी हो लेकिन न वोह अज़ाब को दफ़्द कर सकेगा न उस की शिहत कम कर सकेगा। ¹⁷³ : पहले

تَتَرَلَّتْ بِهٖ الشَّيْطٰنُ ٢١٠ ۞ وَمَا يَبْغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ ٢١١ ۞ اِنَّهُمْ عَنِ

कुरआन को ले कर शैतान न उतरे¹⁷⁴ और वोह इस काबिल नहीं¹⁷⁵ और न वोह ऐसा कर सकते हैं¹⁷⁶ वोह तो

السَّمْعِ لَمَعْرُوْلُوْنَ ۝ ٢١٢ ۞ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ

सुनने की जगह से दूर कर दिये गए हैं¹⁷⁷ तो तू **अल्लाह** के सिवा दूसरा खुदा न पूज कि तुझ पर

الْمُعَدِّيْنَ ۝ ٢١٣ ۞ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ۝ ٢١٤ ۞ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ

अजाब होगा और ऐ महबूब अपने करीब तर रिश्तेदारों को डराओ¹⁷⁸ और अपनी रहमत का बाजू बिछाओ¹⁷⁹

لِيَنْ اَتْبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ ٢١٥ ۞ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْٓ اَبْرِيْءٌ مِّمَّا

अपने पैरव (ताबेअ) मुसलमानों के लिये¹⁸⁰ तो अगर वोह तुम्हारा हुकम न मानें तो फ़रमा दो मैं तुम्हारे कामों से

تَعْمَلُوْنَ ۝ ٢١٦ ۞ وَتَوَكَّلْ عَلٰى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝ ٢١٧ ۞ الَّذِيْ يَرِيْكَ حِيْنَ

बे अलाका (ला तअल्लुक) हूँ और उस पर भरोसा करो जो इज़्जत वाला मेहर वाला है¹⁸¹ जो तुम्हें देखता है जब

تَقُوْمُ ۝ ٢١٨ ۞ وَتَقْلِبْكَ فِى السُّجُوْدِ ۝ ٢١٩ ۞ اِنَّهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝ ٢٢٠ ۞ هَلْ

तुम खड़े होते हो¹⁸² और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को¹⁸³ बेशक वोही सुनता जानता है¹⁸⁴ क्या

اَنْبِيَّاكُمْ عَلٰى مَنْ تَنْزَلُ الشَّيْطٰنُ ۝ ٢٢١ ۞ تَنْزَلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝ ٢٢٢ ۞

मैं तुम्हें बता दूँ कि किस पर उतरते हैं शैतान उतरते हैं हर बड़े बोहतान वाले गुनाहगार पर¹⁸⁵

हुज्जत काइम कर देते हैं, डर सुनाने वालों को भेज देते हैं। इस के बाद भी जो लोग राह पर नहीं आते और हक को क़बूल नहीं करते उन पर अजाब करते हैं। 174 : इस में कुफ़्फ़ार का रद है जो कहते थे कि जिस तरह शयातीन काहिनों के पास आस्मानी ख़बरें लाते हैं इसी तरह हज़रत सय्यिदे आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के पास कुरआन लाते हैं। इस आयत में उन के इस ख़याल को बातिल कर दिया कि येह गुलत है। 175 : कि कुरआन लाएं 176 : क्यूँ कि येह उन के मक्दूर (बस) से बाहर है। 177 : या'नी अम्बिया **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तरफ़ जो वहुय होती है उस को **अल्लाह** तआला ने महफूज़ कर दिया, जब तक कि फिरिश्ता उस को बारगाहे रिसालत में पहुंचाए इस से पहले शयातीन उस को नहीं सुन सकते। इस के बाद **अल्लाह** तआला अपने बन्दों से फ़रमाता है : 178 : हुज़ूर के करीब के रिश्तेदार बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब हैं, हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने उन्हें ए'लान के साथ इन्ज़ार फ़रमाया और खुदा का ख़ौफ़ दिलाया जैसा कि अहादीसे सहीहा में वारिद है। 179 : या'नी लुत्फ़ो करम फ़रमाओ। 180 : जो सिद्को इख़लास से आप पर ईमान लाएं ख़्वाह वोह आप से क़राबत रखते हों या न रखते हों। 181 : या'नी **अल्लाह** तआला, तुम अपने तमाम काम उस को तफ़वीज़ करो (या'नी **अल्लाह** तआला को सोंप दो)। 182 : नमाज़ के लिये या दुआ के लिये या हर उस मक़ाम पर जहां तुम हो। 183 : जब तुम अपने तहज्जुद पढ़ने वाले अस्हाब के अहवाल मुलाहज़ा फ़रमाने के लिये शब को दौरा करते हो। बा'जू मुफ़स्सरीन ने कहा : मा'ना येह हैं कि जब तुम इमाम हो कर नमाज़ पढ़ाते हो और क़ियाम रुकूअ व सुजूद व कुरूद में गुज़रते हो। बा'जू मुफ़स्सरीन ने कहा : मा'ना येह हैं कि वोह आप की गर्दिशे चश्म को देखता है नमाज़ों में, क्यूँ कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पसो पेश (आगे, पीछे) यक़सां मुलाहज़ा फ़रमाते थे। और हज़रते अबू हुरैरा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** की हदीस में है बखुदा मुज़़ पर तुम्हारा खुशूअ व रुकूअ मख़फ़ी नहीं, मैं तुम्हें अपने पसे पुशत देखता हूँ। बा'जू मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि इस आयत में साजिदीन से मोमिनीन मुराद हैं और मा'ना येह हैं कि ज़मानए हज़रते आदम व हव्वा **عَلَيْهِمَا السَّلَام** से ले कर हज़रते अब्दुल्लाह व आमिना ख़ातून तक मोमिनीन की अस्लाब व अरहाम में आप के दौरे को मुलाहज़ा फ़रमाता है। इस से साबित हुवा कि आप के तमाम उसूल आबाओ अच्चाद हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** तक सब के सब मोमिन हैं। (मारक़ व मल रूयूरो) 184 : तुम्हारे कौल व अमल और तुम्हारी निय्यत को।

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثُرُهُمْ كَذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾ وَالشَّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٣﴾

शैतान अपनी सुनी हुई¹⁸⁶ उन पर डालते हैं और उन में अक्सर झूटे हैं¹⁸⁷ और शायरों की पैरवी गुमराह करते हैं¹⁸⁸

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٤﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٤﴾

क्या तुम ने न देखा कि वोह हर नाले में सरगर्दा फिरते हैं¹⁸⁹ और वोह कहते हैं जो नहीं करते¹⁹⁰

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْهُمْ

मगर वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये¹⁹¹ और ब कसरत अल्लाह की याद की¹⁹² और बदला लिया¹⁹³ बा'द

بَعْدَ مَا ظَلَمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢٢٤﴾

इस के कि उन पर जुल्म हुवा¹⁹⁴ और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम¹⁹⁵ कि किस करवट पर पलटा खाएंगे¹⁹⁶

﴿٢٤﴾ سُوْرَةُ التَّمْلِ مَكِّيَّةٌ ٢٨ ﴿٢٤﴾ ﴿٢٤﴾ اٰیٰتِهَا ٩٣ ﴿٢٤﴾ ﴿٢٤﴾ رُكُوْعَاتِهَا ٤ ﴿٢٤﴾

सूरए नम्ल मक्किय्या है, इस में तिरानवे आयतें और सात रकूअ हैं

इस के बा'द अल्लाह तआला उन मुशिरकों के जवाब में जो कहते थे कि मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर शैतान उतरते हैं, येह इशाद फरमाता है : 185 : मिसल मुसैलमा वगैरा काहिनों के। 186 : जो उन्होंने न मलाएका से सुनी होती है। 187 : क्यूं कि वोह फिरशतों से सुनी हुई बातों में अपनी तरफ से बहुत झूट मिला देते हैं। हदीस शरीफ में है कि एक बात सुनते हैं तो सो झूट उस के साथ मिलाते हैं और येह भी उस वक्त तक था जब तक कि वोह आस्मान पर पहुंचने से रोके न गए थे। 188 : उन के अशआर में कि उन को पढ़ते हैं रवाज देते हैं बा वुजूदे कि वोह अशआर किञ्च व बातिल होते हैं। शाने नुजूल : येह आयत शुअराए कुफफार के हक में नाज़िल हुई जो सय्यिदे आलम की कौम के गुमराह लोग उन से उन अशआर को नक़ल करते थे, उन लोगों की आयत में मजम्मत फ़रमाई गई। 189 : और हर तरह की झूटी बातें बनाते हैं और हर लगव व बातिल में सुखन आराई करते हैं, झूटी मदह करते हैं, झूटी हज्व करते हैं। 190 : बुखारी व मुस्लिम की हदीस में है कि अगर किसी का जिस्म पीप से भर जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि शेर से पुर हो। मुसल्मान शुअरा जो इस तरीके से इज्तिनाब करते हैं इस हुक्म से मुस्तरना किये गए। 191 : इस में शुअराए इस्लाम का इस्तिस्ना फ़रमाया गया, वोह हुजूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ना'त लिखते हैं, अल्लाह तआला की हम्द लिखते हैं, इस्लाम की मदह लिखते हैं, पन्दो नसाएह लिखते हैं, इस पर अज्रो सवाब पाते हैं। बुखारी शरीफ में है कि मस्जिदे नबवी में हज़रते हस्सान के लिये मिम्बर बिछाया जाता था, वोह उस पर खड़े हो कर रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के मुफ़ाखर पढ़ते (फ़ज़ाइल बयान फ़रमाते) थे और कुफ़फ़ार की बद गोइयों का जवाब देते थे और सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ उन के हक में दुआ फ़रमाते थे। बुखारी की हदीस में है : हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : बा'ज शेर हिक्मत होते हैं। रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की मजलिस मुबारक में अक्सर शेर पढ़े जाते थे जैसा कि तिरमिज़ी में जाबिर बिन समुरह से मरवी है। हज़रते आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रमाया कि शेर कलाम है बा'ज अच्छा होता है बा'ज बुरा, अच्छे को लो बुरे को छोड़ दो। शअबी ने कहा कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक शेर कहते थे। हज़रते अली उन सब से ज़ियादा शेर फ़रमाने वाले थे। رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ। 192 : और शेर उन के लिये जिंके इलाही से गुफ़्त का सबब न हो सका, बल्कि उन लोगों ने जब शेर कहा भी तो अल्लाह तआला की हम्दो सना और उस की तौहीद और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की ना'त और अस्हाबे किराम व सुलहाए उम्मत की मदह और हिक्मत व मौइज़त और जोहदो अदब में। 193 : कुफ़फ़ार से उन की हज्व का 194 : कुफ़फ़ार की तरफ से कि उन्होंने ने मुसल्मानों की और उन के पेशवाओं की हज्व की। उन हज़रात ने उस को दफ़अ किया और उस के जवाब दिये, येह मजमूम नहीं हैं बल्कि मुस्तहिक्के अज्रो सवाब हैं। हदीस शरीफ में है कि मोमिन अपनी तलवार से भी जिहाद करता है और अपनी ज़बान से भी, येह उन हज़रात का जिहाद है। 195 : या'नी मुशिरकीन जिन्हों ने सय्यिदुत्ताहिरीन अफ़ज़लुल खलक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की हज्व की। 196 : मौत के बा'द। हज़रते इब्ने अब्बास ने फ़रमाया जहन्नम की तरफ और वोह बुरा ही ठिकाना है।